www.sanskritarticle.com

ISSN NO. 2454-9177

National Journal of Hindi & Sanskrit Research

Volume 33 (November-December, 2020)

INDEX – Volume 33 (Nov. – Dec., 2020)

National Journal of Hindi & Sanskrit Research

S. No.	Title & Author	Page No.
1	Importance of Translation Method and Direct Teaching Method in the subject of Sanskrit at the secondary level **Bikash Das**	1 - 4
2	प्राचीन भारत की परिवेश चिन्ता : एक विवेचन **करिम सेख**	5 - 9
3	The Concept Of Rasa Is A Unique Achievement Of The Indian Aestheticians **Dr. N. A Shihab**	10 - 12
4	बदलते परिवेश में ग्रामीण जीवन और गोधन **डॉ. पूनम तिवारी, आदर्श तिवारी**	13 - 15
5	Jaina Concept Of Non-Sensuous Perception: Some Observations **Divakar Mohanty**	16 - 19
6	वास्तुशास्त्रे वृक्षपादपविन्यासनिर्णयः **रोहित शर्मा**	20 - 23
7	व्यक्तिशक्तिवाद अथवा जातिशक्तिवाद **डा. मधुबाला**	24 - 27
8	न्यायसिद्धान्तदीपस्य विविधाः टीकाः **उत्तमकुमारसिंहः**	28 - 31
9	अन्तरिक्ष-स्थानीय देवता **डॉ. नेहा शुक्ल**	32 - 35
10	भर्तृहरिनीतिशतके मनोवैज्ञानिकतत्त्वम् **पुरुषोत्तमः कंसालि**	36 - 38
11	श्रीमद्भगवद्गीता एक अनुशीलन **डा. नूतन कुमारी**	39 - 41
12	स्वातंत्र्योत्तर महिला कहानीकारों की कहानियों में स्त्री विमर्श **डा. ज्योति बाला**	42 - 45

सम्पादकीय परिषद

Chief Editor (Vyakarana and Darsana)
Dr. Saroj Gupta
Associate Professor
Department of Sanskrit
Satyawati College(M), Delhi University,
Delhi

Associate Editor
Dr. Mrs Raju S. Bagalkot
Associate Professor and Research Guide
Department Of Hindi, Karnataka State
Akkamahadevi Women's University
Torvi,Vijayapura-586108

Editors
Dr. Aditya Angiras
Assistant Professor
Department of Sanskrit
Vishveshvaranand Vishwa Bandhu Institute
of Sanskrit and Indological Studies
Punjab University/Hoshiarpur – 146001,
Punjab

Dr. Shyam Deo Mishra
Assistant Professor & Co-ordinator (Jyotish)
Mukta Swadhyaya Peetham (Institute of
Distance Education)
Rastriya Sanskrit Sansthan, Janakpuri,
New Delhi – 110058

Dr.(Smt) Sudha Gupta
Associate Professor
Department of Sanskrit
Juhari Devi Girls P.G. College,
Kanpur – 208004

Dr. Mamta Gupta
Assistant Professor Sanskrit
Government PG College,
Maihar, Satna MP

Dr. Shuchita Dalal
Professor & Head
Post Graduate Department of Sanskrit
Rashtrasant Tukdoji Maharaj Nagpur
University, Nagpur (Maharashtra)

Dr. Kapil Gautam
Additional Examination Controller
Assistant Professor & Convener
Sanskrit Deptt.(Jyotish & Karmkand),
Vardhman Mahaveer Open University, Kota
(Rajasthan)

Dr.Ravi kumar Shastri
Assistant Professor
Department of Yoga
J.J.T. University, Jhunjhunu, Raj.

Dr. Asheesh Kumar
Assistant Professor
Department of Sanskrit
Rajdhani College, University of Delhi, India

Dr. Prasad Gokhale
Assistant Professor
Department of Vedang Jyotish
K.K.Sanskrit University,
Ramtek, Nagpur, Maharashtra.

Dr. Dinakar Marathe
Assistant Professor
Department of Vedang Jyotish
K.K.Sanskrit University,
Ramtek, Nagpur, Maharashtra.

Dr.Manoranjan Senapaty
Reader & Head,
P. G. Department of Sanskrit,
Utkal University, Vani Vihar,
Bhubaneswar, Odisha – 751007

National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2020 (1(33): 05-09
© 2020 NJHSR
www.sanskritarticle.com

करिम सेख
गवेषक/शोधछात्र,
ति.मां. भा. विश्वविद्यालय,
भागलपुर-812007

प्राचीन भारत की परिवेश चिन्ता : एक विवेचन

करिम सेख

शोध सार (Abstract) –

प्राचीन भारत के परिवेश भावना में प्रकृति को कभी भी जीवनदर्शन के प्रतिपक्ष सोचा नहीं है। जीवन दर्पण में प्रकृति के साथ निगूढ़ सम्पर्क में विलीन होकर प्रकृति के साथ जिन सत्त्वा अत्यन्त गंभीर आत्मीयता का अनुभव करने के लिए कहा है, कठोपनिषद में उसका प्रतिफलन परिस्फुटन होता है। जैसे कि-

"यदिदं किञ्चत् जगत् सर्वं प्राण एजतिनिःसृतम।
महद्भयम् वज्रमुद्यतं य एतद्विदुरमृतास्ते भवन्ति।"

इस पृथ्वी में जो कुछ भी विद्यमान है वह सब कुछ प्राणरूप ब्रह्म निःसृत है। जहाँ पर प्राचीन ऋषि लोग निवास करते थे, वहाँ पर विश्वव्यापी प्रकृतिरूप विराट जीवन के साथ ऋषिओं के जीवन एक सूत्र में बाँधा हुआ था। उनके दैनन्दिन जीवन के कर्म के साथ प्रकृति का आदान-प्रदान सीमा-हीन था। प्राचीन भारत की परिवेश चिन्ता की वर्तमान प्रासङ्गिकता हमलोगों के जीवनदर्शन की अनुशीलन के बीच में खोज पाया जाता है।

मूलशब्द/कूटशब्द : नद-नदी, हरप्पा सभ्यता, सामाजिक अवस्था, स्त्रियों का अवस्थान, शिक्षा-व्यवस्था, शासन-व्यवस्था, कृषिकार्य, ज्योतिष-चर्चा।

भूमिका :- भारत के इतिहास हजारों साल पुराना है। पुरातात्त्विक की दृष्टि से मेहरगढ़ एक अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है, जहाँ पर नव्य-प्रस्तर युग का अनेक अवशेष मिलता है। सिन्धु घाटी सभ्यता, जिसका आरम्भ 3300 साल ई० पू० माना गया है। सिन्धु घाटी सभ्यता वर्तमान पाकिस्तान एवं भारतीय प्रदेश में विस्तार लाभ किया है।

पुरातात्त्विक के प्रमाण से 1900ई० पूर्वाद्ध के आस-पास में सिन्धु सभ्यता का अचानक पतन हो गया था। प्राश्चात्य-विद्वान के प्रचलित दृष्टिकोण से कहा जा सकता है कि आर्य जाति के एक वर्ग भारतीय उप-महाद्वीप की सीमा में 200 ई० पू० में जाकर पहुँचा एवं पंजाब जाकर वसति स्थापन किया एवं वहाँ पर भी ऋग्वेद की 'ऋचा' का रचना किया। आर्य जाति के द्वारा उत्तर एवं मध्य भारत में एक विकसित सभ्यता का निर्माण किया, जिसको 'वैदिक सभ्यता' कहा जाता है। प्राचीन भारत के इतिहास में वैदिक सभ्यता प्रारम्भिक सभ्यता के नाम से जाना जाता है, जिसका सम्बन्ध आर्य जातिओं के आगमन के साथ सम्पर्क युक्त है। आर्य की भाषा था संस्कृत एवं धर्म था वैदिक धर्म अथवा सनातन धर्म। परवर्ती समय में विदेशीओं के प्रभाव से इस धर्म का नाम हिन्दु धर्म हुआ। वैदिक सभ्यता सरस्वती नदी के तटीय क्षेत्र में विद्यमान है, जो आधुनिक भारत के पंजाब एवं हरियाणा में विकास लाभ किया है। साधारणतः अधिकतर विद्वान वैदिक सभ्यता का समय 2000-6000 ई० पू० के बीच मानते है। किन्तु कुछ पुरातात्त्विक के मतानुसार वैदिक सभ्यता का समयकाल 3000 ई० पू० माना गया है। इसका कारण यह है कि आर्य जाति का भारत में आने की कोई सठिक प्रमाण नहीं मिलता है, इसलिए वैदिक सभ्यता का भारत में ही शुरूआत हुआ था। वर्तमान में भारतीय पुरातत्त्व परिषद के द्वारा सरस्वती नदी का सन्धान से वैदिक सभ्यता हरप्पा सभ्यता एवं आर्य का सम्बन्ध में एक नया तथ्य सामने आया है, जिससे हरप्पा सभ्यता को सिन्धु सरस्वती नाम दिया गया है।

Correspondence:
करिम सेख
गवेषक/शोधछात्र,
ति.मां. भा. विश्वविद्यालय,
भागलपुर-812007